वैजयन्ती

प्रबोध नारायण सिंह



वैजयन्ती

अहं रुद्राय धनुरा तनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवा उ ।
अहं जनाय समदं कृणोम्यहं द्यावापृथिवी आ विवेश ॥

प्रबोध नारायण सिंह

मिथिला दर्शन प्राइवेट लिमिटेड
कलकत्ता - ४५

प्रथम संस्करण :
दीपावली, १९७६ ई०

प्रकाशक :
मिथिला दर्शन प्राइवेट लिमिटेड
१६२/ए/१३२, लेक गार्डेन्स, कलकत्ता - ४५

मूल्य :
तीन टाका

मुद्रक :
सिंह प्रेस, कलकत्ता-४५

प्रकाशकीय वक्तव्य

श्री प्रबोध नारायण सिंहक कविता मे जनमानस मे आवेश-पूर्ण राष्ट्रीय चेतनाक संचारक प्रयास परिलक्षित होइछ। हिनक कविता मे मानवताक विजयक उद्घोष भेंटत; संक्रमणशील युग-विवर्त्तनक वेदना और यथार्थताक संगहि संग सार्थक दिशा - संकेत सेहो भेंटत। अभिव्यक्तिक गरिमा, शिल्प - सौन्दर्य तथा भाषा-सौष्ठवक क्षेत्र मे सिंहजी विशिष्ट स्थानक अधिकारी छथि।

ई कलकत्ता विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, पालि विभाग, भाषा - विज्ञान विभाग एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग मे अध्यापन तथा शोध - निर्देशनक कार्य क' रहल छथि। ई संस्कृत, पालि, मैथिली, हिन्दी, फारसी, उर्दू तथा भाषा - विज्ञानक विशेषज्ञक रूप मे विश्रुत छथि। मैथिली और हिन्दीक भाषा-वैज्ञानिक तुलनात्मक अध्ययन - विषयक ग्रन्थ लिखबाक उपलक्ष्य मे मगध विश्वविद्यालय हिनका सर्वोच्च उपाधि डी० लिट० सँ विभूषित कैने छन्हि। कलकत्तो विश्वविद्यालय हिनका डी० लिट० क उपाधि सँ अलंकृत कैने छन्हि। कलकत्ता विश्वविद्यालयक ११७ वर्षक इतिहास मे आधुनिक भारतीय भाषा और साहित्यक क्षेत्र मे प्रोफेसर प्रबोध नारायण सिंह प्रथम अबंगाली व्यक्ति छथि जिनका ई गौरव प्राप्त भेल छन्हि।

देशभक्तिक अपराध मे हिनक प्रथम कविता - संग्रह 'विसर्जन'क एकमात्र पाण्डुलिपि १९४२ ई० क क्रान्ति - काल मे पुलिस - द्वारा जब्त क' लेल गेलन्हि, जे पुनः वापस नहि भेंटलन्हि। १९४६ ई० मे हिनक २७ टा हिन्दी कविताक संग्रह 'लासिका' नाम सँ प्रकाशित भेलन्हि। १९४७ ई० मे 'आजाद हिन्द फौज' नाम

सँ हिनक हिन्दी कहानी - सभक संकलन प्रकाशित भेलन्हि। तहिया सँ ई मैथिली, हिन्दी तथा अन्यान्य भाषा मे अनेकानेक ग्रन्थ सभक प्रणयन और सम्पादन कैने छथि।

एहि संग्रह मे प्रकाशित 'लासिका' शीर्षक कविताक रचना-काल १९४५ ई० छैक। एकर अतिरिक्त सब कविता १९६९ ई० सँ १९७१ ई० मध्य लिखल गेल छैक।

हमरा विश्वास अछि जे काव्य - प्रेमी लोकनिक मध्य वैजयन्ती समादृत हैत।

—सुशील कुमार

अनुक्रम

—❀—

प्रथमां सिद्धिं सिद्धिदात्रीञ्च
अणिमाख्यां भगवतीं प्रति।

—भगवान

विजय - वैजयन्ती

देशक रुद्रगणक लेल
दियौक धनुष तानि,
देशक वीरगणक लेल
दियौक जय - विधान !

रुद्र, वसु तथा
आदित्यक रूप धए
विश्व मे अविलम्ब देवि,
जिजीविषा - नव चेतनाक
दियौक रश्मि - दान !

एहन कि
देशक दस्युगणक,
समग्र आयास विफल भ' जाय
तथा
मानवता विजयिनी भ' जाय !
सर्वत्र फहराबैत रहै
अहींक विजय - वैजयन्ती !

●●

जयन्ती

यदि मनुज विज्ञानवान
मानव भ' जाय
त देवता कहाबैत अछि ;
किन्तु यदि दानव भ' जाय
त बसुधा पर
प्रलय कें घींचि आनैत अछि !

प्रचित्त वर्ग आइ
प्रकृष्ट - चित्तता त्यागि
विप्रचित्त भ' गेल अछि !
मोह - ग्रस्त, स्वार्थ - लिप्त,
अहंकार - प्रमत्तान्ध,
प्रकृतिक रहस्यक सम्राट,
विविध विज्ञान - समलंकृत,
धीर - वीर बहुज्ञ ई
वैप्रचित्त - समुदाय
दानवताक वरण कए
भयावह भ' उठल अछि !

शाश्वत मूल्य सबकें दाँगैत,
सामाजिक प्रतिमान सबकें धर्षित करैत
रक्त - लोलुप,
मांस - लोलुप
मुष्टिमेय समुदाय

अकुंठित त्वरा सँ
सभक अधिकार छीनि
स्वयं
सूर्य, इन्द्र,
अनिल, इन्दु,
यम और वरुण बनि बैसल अछि!
सर्वत्र
एकर अप्रतिहत गति छैक!

कोटि - कोटि निरीहक
सद्यः पातित शव - स्तूप पर
सगर्व क्रूर - ध्वज स्थापित करैत
चण्डाट्टहास सँ दिग्दिगन्त कें
आकुलायित क' रहल अछि!
आघूर्णीयमान खगोल,
धावमान मेघ सभक कोलाहल
और उल्का सभक चीत्कार
आजुक अत्याचारक
साक्षी अछि!

उद्वेलित धरा
और तूष्णीभूत महीधर
प्रत्यक्ष - दर्शी छथि
कुत्सित अनाचारक
नृशंस अत्याचारक!
वज्र - नृशंस पशुता सँ

असह्य भ' उठल अछि वातावरण,
तिलमिला उठल अछि विश्व !

यूप - स्थापित
मेषीभूत मानवता
त्राहि - त्राहि क' रहल अछि,
जपि रहल अछि—
"जयन्ती मंगला काली !"
कि कहिया आयब
तेजोद्भासित
रुद्राणी रूप धए
कहिया विदीर्ण हैत
विप्रचित्त सभक छाती !

देश - देश मे,
युग - युग मे,
तिमिरावरण कें चीरि
आविर्भूत होइत रहैत छी—
कत्तहु जान आफ आर्क बनि कए
कत्तहु दुर्गा बनि कए
कहियो रक्त - दन्तिका बनि कए
कहियो क्रान्ति - धात्री
महाकाली बनि कए !

आशाक अनुरंजित रश्मि सँ
दिशा - विदिशा कें

उद्भासित करैत
गूँजि रहल अछि ओ
अहाँक अभयदा वाणी—
जहिया - जहिया
दानवोत्था बाधा हैत,
हम आविर्भूत भ' कए
अरि - संक्षय करब ; और
पुनरप्यतिरौद्रेण रूपेण पृथिवीतले
अवतीर्य हनिष्यामि वैप्रचित्तांस्तु दानवान् !

●●

बढ़ैत चलू

यौवन सँ उद्दीप्त
अहाँ प्रबुद्ध छी,
अहाँ शुद्ध छी,
सतत अनिरुद्ध छी !
बढ़ैत चलू, बढ़ैत छलू,
गढ़ैत छलू, गढ़ैत चलू !

विकृत नेत्रवला आ' विकृत विचारवला
उच्छिष्टजीविये लोक सब देखैत अछि
निराशा, आक्रोश वा सन्त्रास !
नैसर्गिक वृत्ति
मुमूर्षा नहि, जिजीविषा थीक !

कोनो गन्दा नाली मे
वा चूरू भरि पानी मे
डूबि कए आत्मघात करनिहार
अपन मेरुदण्डक लोपक कल्पना करनिहार
हशीश और भंगक उपासक
हे बसुन्धराक उदीयमान नौनिहाल लोकनि,
यादि राखब,
जीवन छैक उत्कर्ष मे,
विवेक छैक विमर्श मे
यौवन छैक संघर्ष मे !

हे मननशील ऋषि सन्तान लोकनि,
उठू, जागू,
असि - धारहु पर चलि कए
वरणीय कें प्राप्त करू !
कुण्ठा समाप्त करू !
बढ़ैत चलू, बढ़ैत चलू,
गढ़ैत चलू, गढ़ैत चलू !

नव सन्धानक लेल बढ़ू, चलू !
नव उत्थानक लेल बढ़ू, चलू !
नव निर्माणक लेल बढ़ू, चलू !
नव विहानक लेल बढ़ू, चलू !
●●

निर्माण नीक

नाश हेय
निर्माण नीक !

युग - भ्रान्ति त्याज्य,
शुभ क्रान्ति नीक,
शुभ वेष मन्द,
सद्भाव ठीक !

शंका सँ चललै काज कतय ?
ई द्वेष भला
परिवेश कतय ?—
हो जग मे भय के लेश जतय !
छल - छद्म - कपट सँ लाख गुना
प्रज्ञालोकित विश्वास - निचय !

जीवन

जीवन ?
ने ई थीक बालूक घरौंदा,
ने कँटहा बिसैला पौधा
ने थीक अर्थ - हीन मृग - तृष्णा
ने कोमलमति कविक
कपोल - कल्पना,
ने अन्तस्सार - शून्य
मृदंगमुखी मानवक जल्पना !

ने ई थीक आक्रोशक आवेग मे
सिर धुनबाक प्रक्रिया
वा अपनहि गाल पर
ताबड़तोड़ तमाचा मारबाक
विचित्र उपक्रम !
ने ई थीक कोनो क्लीवक दिवास्वप्न
और ने कोनो पराजितक क्रन्दन।

ने ई थीक पेट, ने पीठ,
ने ई केवल प्रणयक
टीस और आह - भरल
रोचक कहानी थीक;
ने अगाध सिन्धु कें
थाहबा मे असमर्थ
बुलबुला जकाँ फ़ानी थीक।

ने ई थीक वृन्त - च्युत कुसुम
ने दूर्वादल पर उपेक्षित अश्रु - विन्दु
ने ई महाकालक विवश ग्रास
वा केवल मरणक पूरक थीक।
ने ई नरकक भोग थीक,
ने अनचाहा रोग थीक,
ने केवल संयोग थीक।

जीवन ?
ई थीक पुरुषार्थक क्षण,
तमोराशि पर ज्योतिक अभियान
और काल - जयी कर्मक
दुर्निवार आह्वान।
ई थीक प्रगतिक प्रक्रिया
विश्व - चेतना मे
व्यष्टिक निलय
वा बूँदक वारिधिता।

ई थीक नटराजक महाताण्डवक
एक अद्भुत् सम
लासिकाक शिंजिनीक
मादक झंकृति;
ई थीक
श्रेय और प्रेयक कगार - मध्य
सत् आ' चितक ऊर्मि - राजि सँ पुलकित
बहैत, गरजैत, वेगवती,
अपराजेय,
अजस्र ऊर्जाक धारा!

●●

जय हो

जय हो !
जय हो !!

महाकाल केर तृतीय नेत्रक
कज्जल - रेखा - सन
बहु - भाव - मयी
तन्वंगी श्यामे,
जय हो !

ईषद् व्रीड़ा - नमित बीचिमय
भ्रू - युग - भंग विचंचल
करैछ सदा भावुक केर शंकित
उद्वेलित वक्षस्थल !
कुन्तल के घन
प्रसरित सुरभित
लैत'छि गीरि चेतना - निःस्वन
आश्लेषे सँ आबै जीवन
आश्लेषे सँ परबै जीवन

महाकाल केर कंठावस्थित
कालकूट सन असित
सुहासिनि,
जय हो,
जय हो !

हँसू और इतराउ

गाउ,
हँसू और इतराउ,
हे शिशु,
हँसू और इतराउ !

थिरकू, किलकू,
नाचू - उछलू,
हँसू और इतराउ,
हे शिशु,
हँसू और इतराउ !

अहाँ ने एखनहुँ दुर्जन देखल,
अहाँ ने एखनहुँ जीवन देखल,
मूर्खक जीत ने कखनहुँ देखल
धूर्त्तक रीति ने कखनहुँ देखल
तड़पि - तड़पि कए कपसैत लोगक
शुद्ध हृदय केर प्रीति ने देखल।
लिप्सा - विह्वल जल - चित्रित प्रिय
इन्द्र - धनुष कें धरबा खातिर
धावित जन केर पाँति ने देखल;
सर्प - सनक सुन्दर काया - युत
कोकिल सन सुमधुर वाणी - युत
दुष्ट लोक केर काँति ने देखल।

भला, अहाँ कें चिन्ता केकर ?
यदि क्यो हँसि कए
क्षीर बता कए
घुटका देमै
सहज हलाहल ?
क्रीडा - खातिर बिहँसि बतावै
धहधह ज्वलितानल !
कहू, अहाँ कें चिन्ता केकर ?

जा धरि कनियों बोध ने होइत' छि,
जा धरि कनियों क्रोध ने होइत' छि
ता धरि नाचू,
हँसू और इतराउ;
हे शिशु,
हँसू और इतराउ !
●●

एशियाक गौरव-दीप्त भालक कलंक

एशियाक
गौरव - दीप्त भालक कलंक
हे नर - पिशाच लोकनि,
साक्षात् चिंगेज,
तिमूर और नादिरशाह लोकनि,
याहिया और भुट्टोक यार लोकनि,
पाकिस्तानी खूँखार लोकनि,
जनिका तों सब लुटलह,
जनिका तों सब दाँगलह,
जनिक धज्जी - धज्जी उड़ौलह
ओ सब तोरा लोकनिक अपनहि भाइ छलथुन्ह !

तों सब बैरक मे बन्द कए,
जब्त कए, नग्न कए
कानैत, सिसकैत,
भुइयाँ पर माछ जकाँ तड़पैत
जाहि हजार - हजार हसीना सभक
अस्मत लूटलह
ओ लोकनि तोरा सभक अपनहि
दुलारि बेटी छलथुन्ह,
बहिन छलथुन्ह, माय छलथुन्ह !

मन्दिर और मसजिद सब कें
तों सब धराशायी क' देलह,
आगि लगा देलह

मदरसा और दानिशगाह सब मे
भूजि देलह असंख्य नौनिहाल सब कें!

आन, बान, शान
और वतन पर मरि मिटनिहार
बंगला देशक वीर लोकनि
परखि लेलथुन्ह,
समझि लेलथुन्ह—
तोहर धर्मक दोहाइ
मिथ्या थिकह,
ढरनच थिकह!
इन्सानक खाल ओढ़ि कए
भेड़िया अगर
दोस्तीक हाथ बढ़ावै
त खतरा छैक!
●●

प्रीति

चेतनाक उत्स
आ' एषणाक चरम अन्विति
देवि, तोहर भाव - भींजल प्रीति !

श्वसन कम्पित, वेग ताड़ित
गिरि विमद तरु सघन; सावन
घन प्रसर तम - तोम
दाम विद्युद्वलित क्षण - क्षण,
सृष्टि में भरि प्राण, कल गति,
मद, क्रिया केर रीति ।
देवि, तोहर भाव - भींजल प्रीति !

भाव - संकुल मदिर मधु - कृत
नयन सँ उन्मेष ।
लुप्त होइछ अस्मिता सन
काल आ' दिग्देश !
ऊर्मियेक कर थाम्हि जखनहि
भ' चुकल अर्पित तरी त'
फेर रहत की भीति ?
देवि, तोहर भाव - भींजल प्रीति !

○○

उपदेश

नेना देखलक—
बाबूजी
गोष्ठीक केन्द्र मे अवस्थित
मन्त्रणाक चरम विन्दु पर
लोग सब सँ घेरल रहितहुँ
सिकरेटक कश जोर सँ खीचैत छथि,
और सब लोग
उन्मुख तथा एकाग्र - चित्त भए
हुनक अर्ध - निमीलित नेत्र दिसि
एक टक निहारि रहल छथि
जेना किछु पैबाक लेल उत्सुक होथि !

वातावरणक गंभीरता,
विषयक महत्त्व,
मन्त्रणाक सार्थकता
और केन्द्रीय व्यक्तिक गरिमा,
एहि सब मे
चारि चाँद लगा दैत हो
जेना इयैह सिकरेटक चक्करदार धुइयाँ !

धुइयाँ सँ बनैत अछि मेघ,
धुइयाँ सँ चलैत अछि जहाज,
धुइयाँ सँ चलैत अछि रेल,
धुइयाँ सँ चलैत अछि मिल,

कल, कारखाना, नाना उद्योग ;
धुइयाँ सँ चलैत अछि मन्त्रि - मंडल,
बड़ - बड़ योजना ;
धुइयेंक बल पर
लड़ल जाइछ बड़ - बड़ चुनाव ।
एकर महिमा अपरम्पार,
एकर माया दुर्निवार !

जग मे एक धुइयें टा सार,
धन्य देव हे जगदाधार !

नेना सोचलक,
नेना समझलक !

दोसर दिन ओ
सिकरेट धरौलक
और मस्ताना अन्दाज सँ
गंभीर मुद्रा मे
बाबूजीक पास पहुँचल
वाहवाही पैबाक लेल—
जतय बाबूजी स्वयं पी रहल छलाह ;
कश - पर - कश लैत
जिन्दगी सही माने मे जी रहल छलाह !
नेना ओत्तहि पहुँचल,
मुँह मे सिकरेट नेने

गंभीर मुख - मुद्रा मे
ओत्तहि पहुँचल !

बाबूजी ओकरा मुँह सँ
सिकरेट छीन लेलथिन्ह
और तानि कए मारलथिन्ह तमाचा;
फेर चक्करदार धुइयाँ फेंकैत
मूल्यवान उपदेश देलथिन्ह—
"हौ बकलेल, सिकरेट त गदहा पीबैत अछि !"
७७

तक्षकक वंश-दीप

हे देव,
हे सर्प,
तों बड़ सुन्दर छह,
चतुर छह, सुविभूषित छह!
बाहरक टीमटाम बनौने रहैत छह,
कियैक त अन्दरक विष
और मुसकानक भीतर
चमकैवला विषदन्त
के देखैत छैक ?

हे निर्भय,
हे तक्षकक वंश - दीप,
डँसैत चलू परीक्षित सब कें
भावी प्रताप कें, शिवाजी कें,
सुभाष कें, तिलक कें,
भक्ति - शील - संयुत् प्रणाम करैवला
नौनिहाल युवक - युवती लोकनि कें।

तोरा भय की ?
की हैतह
जन्मेजय लोकनिक नाग - यज्ञ सँ ?
सत्ता - लोलुप इन्द्र लोकनिक अनुकम्पा सँ
सिंहासनक नीचा नुकैबा लेल

मुट्ठी भरि जगह,
मिलिये जाइत रहतह !

हे गुप्तपाद,
की मजाल जे क्यो
तोहर गतिविधिक
पता पाबि जाय
वा तोहर षडयन्त्र सभक
उद्घाटन क' देमय !

भाइ सभक बीच
अकारण महाभारत मचाबैवला
हे कूटनीति - विशारद,
आइ यदि शकुनि रहतिहथि
त तोहर चरण - स्पर्श कए
स्वयं कें धन्य मानितथि !

हे भाग्यवान,
फटाटोपहि टा सँ
तोहर पैघ - पैघ कार्य सिद्ध भ' जाइत छह !
तों हुनको नहि छोड़ैत छहुन्ह
जे तोहर आदेश पर, इङ्गित पर
वा रंगीन प्रलोभन पर
भविष्यक आशा मे
मण्डूक - मण्डूकी जकाँ
सज्जन लोकनिक

भित्तिहीन अपयशक बेसुरा गीत
दिन - राति टर्राबैत रहैत छथि !
कहियो आगाँ सँ
और कहियो पाछाँ सँ
हुनका जीविते गीरि लैत छहुन्ह !

किन्तु,
गोष्ठी सब मे गेंडुली लगा कए
विराजमान होइवला हे फणपति,
देशक, राष्ट्रक
विद्यापीठ और धर्मपीठक
सात्त्विक मर्यादा कें दाँगि कए
अधिक प्रकाश मे नहि आबी,
अधिक आतंक नहि फैलाबी,
अधिक नहि इतराबी,
कियैक त—
दयामय विष्णुक वाहनक दृष्टि
तोरो पर पड़ि सकैत छह !
●●

आत्म-विश्लेषण

हे मन्त्री लोकनि,
हे सत्ताधारी लोकनि,
साँच - साँच बतायब,
अहाँ कत्तेक चिन्तन
राष्ट्रक लेल,
समाजक लेल,
निर्वाचक लोकनिक लेल
वा जनता - जनार्दनक लेल
करैत छी
और कत्तेक केवल अपना लेल ?
मन, कर्म और वचनक एकनिष्ठता सँ
अपन चरित्र और आचरण सँ
केहन आदर्श उपस्थित करैत छी ?
अफसर तथा अध्यापक लोकनि पर
दोषारोपण करैत रहला सँ
कहिया धरि काज चलत ?

हे अध्यापक लोकनि,
पंच पिता मे अन्यतम,
वृहस्पति, वशिष्ठ, याज्ञवल्क्य,
गोतम, कपिल, कणाद,
सन्दीपनी और जैमिनिक
नमस्य उत्तराधिकारी लोकनि,
साँच - साँच बतायब,

की अहाँ
देशक नौनिहाल लोकनिक प्रति
अपन कर्त्तव्य निबाहि रहल छी ?
पान, ताश, गप और गुटबन्दी सँ
कहिया धरि काज चलत ?

हे उपदेशक लोकनि,
अपनेक रंग बहुत अछि,
ढंग बहुत अछि,
अपनेक दल सब सँ पैघ अछि !
अहाँ सब मे सँ एकहु गोटे
यदि उपदेश देनाइ छोड़ि कए
केवल अपनहि सुधार करि लेतिहै
त ई सान्त्वना त होइत
जे संसार सँ एक मूर्खक संख्या
कम भ' गेल !

सूत उवाच

नैमिषारण्य मे एक दिन
कुलपति शौनक जी
ज्ञानवान सूत सँ
श्रद्धान्वित प्रश्न कैलन्हि —

हे विश्व - विश्रुत, ब्रह्मलीन,
अज्ञान - ध्वान्त - विध्वंस - कोटिसूर्य - सम - प्रभ,
त्रिकालज्ञ, महामति सूतजी,
सुनल अछि,
घोर कलियुग मे
सब व्यवस्थे बदलि जायत !

यन्त्र - निर्भर, परिश्रम - हीन लोग
नाट और छोट भ' जायत !
भट्टा तोड़बाक लेल
पौधा पर सीढ़ी लगाओत !
वर्ण - भेद, श्रेणी - भेद,
पाप - पुण्य,
त्याग - भोग,
भाइ - बहिन,
शत्रु - मित्र,
सब भेद मेटा जायत !
तप - ज्ञान व्यर्थ हैत,

अर्थक अनर्थ हैत,
शब्दक ने अर्थ हैत !

ओहन दशा मे
समृद्ध और गृद्धमे
रक्षक और भक्षक मे
तथा
साधु और चोर मे
अन्तर की रहि जायत ?

ईषत् स्मितिक संग
गम्भीर गिरा मे उत्तर गूँजल—

सत्य थीक शौनक,
कलियुग मे
समृद्ध और गृद्ध
प्रायः एकार्थक भ' जायत।
दुनू नग्न भोगक नाद सँ
दिशा - प्रान्तर कें गुंजायमान राखत,
नोचि - नोचि कए खायत दुनू
रक्त - श्लथ
मृदु मांस मनुष्यक !
ओकरा सभक दूर - व्यापिनी दृष्टि
और वक्र चंचुक प्रवेशक
प्रशस्ति गाओल जायत !
अन्तर एतबहि रहत

जे गृद्ध मृतक कें और
समृद्ध जीवित कें नोचत !

जनता
अकाल - व्याल - मुख - त्रास - निर्णाश - हेतु
जनार्दन कें गोहारतन्हि;
देवोत्थानक निमित्त
आर्त्त सत्याग्रह करतन्हि !
अशेष - शायी क्षीर - सागर - वासी
प्रभुक निद्रा भंग हेतन्हि !
मुचकुन्दी कोपानल बरसत,
पुलिस - वाहिनीक गोली
छाती छेदि कए
प्राण कें सहजहि
देवलोक पहुँचा देतन्हि !
बहुमतक जोरे मात्र सँ
सब अधिकार छिना जायत !
पूँजीवादक साजिश सँ
जनताक इज्जत,
अन्न और प्राण
सब किछु शासनायत्त भ' जायत !
और तखन
रक्षक और भक्षकक भेद
सर्वथा मेटा जायत !

नमहर - नमहर ओझराओल रुक्ष केश
जटाक काज करत !
अर्द्ध - लुप्त, मध्य - लुप्त,
तृतीयांश - लुप्त, त्रिकोणवत
नानाविध दाढ़ी करत
कलियुगी साधुताक उद्घोष !
प्रज्ञा - पारमिता वा महासुखक अनुसन्धान मे
साधु सँ बेसी साध्वी लोकनि
वस्त्रावरण ओहिना फेंक देथिन्ह
जेना केंचुआ कें नागिन !
प्रति चोर
स्वयं कें साधु कहत
अन्तर एतबहि रहतैक कि
जे पकड़ाओत से चोर
और जे नहि पकड़ाओत
से साधु मानल जायत !
●●

कलकत्ताक एक सन्ध्या

आजुक
महानगरीक जनसंकुलता मे
विजनता, तिक्तता, धूमावरण
और उल्काक अशुभ
विस्फोटक उत्पात
कि चिर स्थायी भ' जायत ?

हिरण्यवर्णा महाचण्डिका क
दीप्तिमय भाल पर
मुमूर्षाक कज्जल विन्दु - वत्
युगक ई आजृम्भित वृत्त
की लोमशक सोदर थीक ?

मृतवत्साक कुररी - रव,
सद्यः पितृ - हीना किशोरीक क्रन्दन,
सोदरक वक्षक
खूनक फव्वारा कें
हाथ सँ दबबैत
विवश भगिनीक
अस्फुट आर्त्त स्वर,
भुवन - सुन्दरी प्राणेश्वरी पत्नीक
नग्न - लुंठित - धर्षित देह - यष्टि पर

पतिक विस्फारित नेत्र,
जीवनक निधि कें गमाबैवला
असहाय - अबोध जन - गणक चिर - शंकित हृत्कम्प
और व्योमक विशाल वक्ष कें
विदीर्ण करैवला विस्फोट
की कहि रहल अछि ?

अन्नक संकट,
प्राणक संकट,
अस्तित्वक संकट,
चींटी और माछी जकाँ मरै - मिटैवला
दीन - हीन - दलित - शोषितक आर्त्तनाद
की सन्ध्याक कालिमा कें और विभीषिका कें
सहस्र गुण क' देबाक लेल
पर्याप्त नहि छैक ?

गणतन्त्रीय भारतक ई निर्वाचित नेता
विध्वंसक भीति सँ
हिंसोपकरण सँ
ककर मंगल - विधान क' रहल छथि ?
कलकत्ताक एहि संध्याक अन्धकार मे
की एहि रहस्यक
उद्‌घाटन हैत ?
●●

अन्धविश्वास

हे अन्धविश्वास,
प्रतीत होइछ,
अहूँ शाश्वत सत्य छी !
अहाँक परिधान
कखनहुँ धार्मिक,
कखनहुँ दार्शनिक
और कखनहुँ राजनीतिक होइछ !

अहाँक महिमा
सब युग मे
सब देश मे
सब क्षेत्र मे
अक्षुण्ण अछि !

अहाँ कें चिन्ता की ?
नव युग मे
नव अन्धविश्वासक परम्परा चलत !
कहियो राजतन्त्रक नाम पर,
कहियो गणतन्त्रक नाम पर
और कहियो साम्यवादक नाम पर
अहाँ सदैव अक्षुण्ण रहब !

●●

गप्प लड़ाउ

की बकै छी बेकारे
मैथिली - मैथिली
आ' मिथिला - मिथिला !
एहि मे किछु छैक ?
बरन्
गप्प लड़ाउ त एकटा बातो !

देखैत नहि छियैक—
घोर कलियुग ?
अतत्तह भ' रहल अछि !
नै ओ पूजा - पाबनि
नै ओ व्रत - अनुष्ठान
नै ओ निमंत्रण पर निमंत्रण !

कतय गेल —
ओ छल्हिगर दही
आ' सोन्हगर खीर !—
कतय गेल ओ
खबौनी - पूआ आ' सकरौरी ?

की कहलियैक—
मैथिली आ' मिथिला ?
जाइ दियह ओ सब बकथोथनि !
आउ एम्हर
दियौक एक जूम खैनी
आ' चौपाड़ि पर बैसि कए
लड़ाउ गप्प
त एकटा बातो ।

●●

नव कनियाँ लोकनि······

आइये अखबार मे पढ़ल अछि—
हमरहु देशक नव कनियाँ लोकनि
आब घर मे बाढ़नि नहि देतीह;
हुनकहु लोकनि मे
आधुनिक रुचि - बोध जागरित भ' गेल छन्हि!

करैत हेतीह मुनि - कन्या लोकनि
संयमक बाढ़नि सँ
आभ्यन्तर अजिरक
वासनाक आवर्जनाक निष्कासन
किन्तु आजुक वैज्ञानिक युग मे कनियाँ लोकनि
मनु - शतरूपाक अन्धयुगीन
पुरातन गेन्हायल परिपाटी कें
कहिया धरि उगहैत रहतीह?

पसरि जौं जाइक
झिंगुर, उचरिंग, देवार,
माछी, मच्छर, मुसरी आ पिपीलिका
त क्षतिये की?
कहने नहि छलथिन्ह हाब्स
जे कृत्रिमता - हीन प्रकृतिक राज
बड़ मनोरम रहल हेतैक?

रूढ़िक कुहेलिका कें अतिक्रान्त कए
ओ सब विकासक अभिनन्दन करतीह ;
नव युगक नव दर्शनक शंख बजौतीह !
तैं—
हमरहु देशक नव कनियाँ सब
आब घर मे बाढ़नि नहि देतीह ;
हुनकहु लोकनि मे
आधुनिक रुचि - बोध जागरित भ' गेल छन्हि !



लासिका

लासिके, हो मधुर, शाश्वत
नृत्य ई तोहर चिरन्तन!

परम ईश्वर केर करुणतम
प्राण केर अभिव्यक्ति तों ही,
सत असत् के परम कारण
केर विधायक शक्ति तों ही;
क' रहल अछि भक्ति - विह्वल
मधु-विकल गुण-गान कण-कण!
लासिके, हो मधुर शाश्वत
नृत्य ई तोहर चिरन्तन!

नींद सँ अभिभूत, जाग्रत
परम सत्ता केर हृदय मे
प्रकट क्रमशः द्रुरित होइछै
सृजन सुन्दर आ' प्रलय मे!
एषणा - संकुल हृदय मे
शुचि, अनामय, प्रथम सिहरन!
लासिके, हो मधुर, शाश्वत
नृत्य ई तोहर चिरन्तन!

गुण, अवधि आ' काल निकलल
एक भ्रू - निक्षेप मे जे;
प्रणव ध्वनि मंजीर - मंडित
एक पद - विक्षेप मे जे;
किंकिणी मे निगम सबहक
मन्त्र छल गुंजित विलक्षण !
लासिके, हो मधुर, शाश्वत
नृत्य ई तोहर चिरन्तन !!

मुदित जीवन - मरण हासक
अनुगमन क' रहल सदिखन !
राग - रंजित चरण - रज सँ
झरि रहल तम - रश्मि कण-कण !
चन्द्र, रवि, नीहार सर्जित
जेम्हर टघरै स्वेद के कण !
लासिके, हो मधुर, शाश्वत
नृत्य ई तोहर चिरन्तन !!

हास - निस्सृत कण तड़ित, नभ
नील तोहर भव्य कुन्तल !
इन्द्र - धनु आपीड़ तोहर
आ' प्रलय घन दिव्य अंचल !
अधर रंजित पूर्व - पश्चिम
नभक, कए चरण - चुम्बन !
लासिके, हो मधुर, शाश्वत
नृत्य ई तोहर चिरन्तन !!

लासहिक द्रुत ताल पर तँ
सुर मिला कए छन्द आवै
मुग्ध कवि के, आ' ओही पर
ग्रह सकल चक्कर लगावै!
रिझावै किनका विलासिनि
क' रहल छी सतत नर्त्तन?
लासिके, हो मधुर, शाश्वत
नृत्य ई तोहर चिरन्तन!!

हनुमान अष्टक

माता जे मैथिली अपमानिता पड़ल छथि
हुनका उबारै लेल देश कें जगाओत के ?

धर्मधर युवक कें किछुओ असंभव नै
सागर कें लाँघि ई साँच कए देखाओत के ?

जननी - जनम - भूमि - सेवक सुभट लाल
लक्ष्मण रण - खेत मे मूर्च्छित, बँचाओत के ?

सुरपुर के त्रास औ' अरि के हुलास हरि,
संजीवन पैबा लेल धौलागिरि लाओत के ?

छाया - ग्राहिणी मन मोहिनीक रूप - जाल सँ
सेवा - व्रत - धारी के संयम कें बँचाओत के ?

पदक मोह सँ विमोहित भए गोहि जकाँ
नेता मत - क्रेता कें धक्का दए जगाओत के ?

हिरण्मय पात्र सं सत्यक मुँह झाँपल जे
तकरा उघाड़ि आत्म-ज्योतियो जराओत के ?

विदेशी सँ अपहृत देश - लक्ष्मी कें आनै ले
एकनिष्ठ व्रत धारि प्राण कें जुड़ाओत के ?

उताहुल छथि सब क्यो प्रभुते पावै लेल
चेले टा मुड़बा लेल नहि छथि आरत के ?

सब सुख त्यागि कए अहाँ जकाँ हनुमान
स्वार्थ - हीन सेवा - व्रत भारत मे धारत के ?

धीरज के आगर उजागर पुण्य - ज्ञान के
अहाँ बिना साहस के आगिन पजारत के ?
लंका के जारत, कए यमराजो कें आरत
गीलि सूर्यो के डारत ? मैथिली उबारत के ?

नेता सब भ' अबंड, बाजै छथि अंड - बंड,
देश भेल खंड - खंड, लाजो बँचाओत के ?
सीमा पर ठाढ़ भेल, शत्रु करै रेल - पेल,
ओकरा सद्यः धकेलि, बाजू, भगाओत के ?
अधर्मक तमोजाल, स्वार्थक आन्ही कराल,
ताहि मे लेसि मसाल, रस्ता देखाओत के ?
अहाँ बिना धीर वीर, युवा जन महावीर,
देश के हरैत पीर, मानो बढ़ाओत के ?

ठकबा लेल जनता कें बनल कालनेमि
मन के विमोहक कतेको विधि नारा छै ।
देखावै दिवा - स्वप्न खुआबै मनक लाउड़
सुदेशी - विदेशी अनेक विचार - धारा छै ॥
प्रज्ञा कें, तपस्या कें आ' सुमेधा - संस्कारहुँ कें
किनबा हेतु विदेशी द्रव्यक पसारा छै ।
सुख रंग के फुहारा छै, फँसैबा के चारा छै
प्रेमक इशारा छै औ' भोगे ध्रुव - तारा छै ॥

रूढ़ि रूप सुरसा के पेट मे धरम - नीति
कर्म और शीलो साँच संसारे मे खीन छै !
बहत्तर हाथ अँतड़ी मे बिला गेल मैत्री
तथा शौर्य - वीर्य - प्रज्ञा नीक जकाँ हीन छै !

द्विगुणित रूप धारि वीर जकाँ ललकारि,
नम्र भए झुकियो, के सेवा मे प्रवीण छै ?
अरि पासे मे चीन छै, युवक नीन दीन छै,
देहली लग सुरसा गिलबा मे लीन छै ।।

ऊर्जस विवेक - रूप लक्ष्मण औ' राम कें
सुतलहि मे ल' गेल राक्षस पताल कें।
दौड़ि महावीर बंका वेग बजबैत डंका,
घेरि पतालक लंका तमीचर - जाल कें ।।
उठा देवियेक खंडा, काटि अरियेक मुंडा,
गाड़ि सीतापति झंडा मारल कराल कें।
दए शंक दिक्पाल कें, पलांक भूत - बाल कें
झुंड करबाल कें औ' मुंड महाकाल कें ।।

देश महावीर नहि स्वारथ मे गारत हो
धरम बिसारि नहि पापक पुजारी हो।
बहिन औ' बेटी जकाँ बूझि पर - नारी - वृन्द
युवक - समाज वीर धीर ब्रह्मचारी हो ।।
ने काम - क्रोध - तृष्णा के पंक मे निमज्जित हो
कनेको संत्रस्त हो ने रंचहु दुखारी हो।
आनक उपकारी हो, महान सुविचारी हो
राम - ध्वज - धारी हो आ' मैथिली - पुजारी हो ।।

●●

ग्रन्थकार - परिचिति

श्री प्रबोध नारायण सिंह

- शिक्षास्थल : शाहपुर, शाह आलमनगर, सहर्षा, मधेपुरा, टी० एन० जे० कालेज, भागलपुर, पटना कालेज और कलकत्ता विश्वविद्यालय।
- हिन्दी विद्यापीठ सँ साहित्यालंकार और साहित्य सम्मेलन सँ साहित्यरत्न।
- पटना विश्वविद्यालय सँ संस्कृत मे प्रतिष्ठा और कलकत्ता विश्वविद्यालय सँ हिन्दी, पालि, फारसी तथा भाषा - विज्ञान मे एम० ए०।
- मगध विश्वविद्यालय सँ "हिन्दी खड़ी बोली और मानक मैथिलीक तुलनात्मक भाषा - वैज्ञानिक अध्ययन" शीर्षक ग्रन्थक लेल डी० लिट०।
- कलकत्ता विश्वविद्यालय सँ "वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य मे रस - सिद्धान्त" नामक ग्रन्थक लेल डी० लिट०।
- भाषा - ज्ञान : संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, मैथिली, हिन्दी, बंगला, उर्दू, फारसी और अंगरेजी।
- प्रमुख प्रकाशित ग्रन्थ :—

  लासिका (कविता - संग्रह), १९४६ ई०

  आजाद हिन्द फौज (कहानी - संग्रह), १९४७ ई०

  प्रतिमा (कहानी - संग्रह), १९५२ ई०

  रुद्राष्टक (कविता), १९५६ ई०

  हाथीक दाँत (एकांकी), १९६१ ई०

  चोर (अनूदित नाटक), १९६५ ई०

  अन्हेर नगरी (अनूदित नाटक), १९६५ ई०

  प्रेमक रोग (नाटक), १९६८ ई०

  हनुमान अष्टक (कविता), १९६८ ई०

  जयन्ती (कविता - संग्रह), १९७२ ई०

  वैजयन्ती (कविता - संग्रह), १९७६ ई०

स्थायी निवास : ग्राम—सहमौरा, पो०—शाहपुर बाजार, जिला—सहर्षा।

वर्त्तमान पता : १६२/ए/१३२, लेक गार्डेन्स, कलकत्ता-४५